REET 2025 LEVEL-1&2

वंदन बैच

संस्कृत

छंद

LIVE 07-02-2025 03:00 PM

छन्द (लेवल 1 व 2 की भाषा द्वितीय के लिए)

8 फरवरी (दोपहर 2 बजे)
प्रैक्टिस सेट - (1)
YouTube

छन्द शास्त्र परिचय:

छन्द शास्त्र अत्यन्त प्राचीन शास्त्र है जिसका नाम छन्दोविचिति है। आचार्य पिंगल छन्दशास्त्र के प्रथम आचार्य हुए हैं। इनका दूसरा नाम नागराज है। इनकी पुस्तक 'छन्दसूत्रम्' (पिंगल सूत्रम्) के नाम से प्रसिद्ध है। छन्दसूत्रम् के आधार पर ही छन्दोनुशासन, रत्नमंजुषा, वृत्तरत्नाकर, सृवृन्त तिलक, श्रुतवोध, छन्दोमंजरी आदि ग्रन्थों की रचना हुई। वेदों में तो मात्र छः छन्दों का ही प्रयोग हुआ है, परन्तु समय-सरित के प्रवाह के साथ अनेक छन्दों ने जन्म लिया तथा इनकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती चली गई।

छन्द की परिभाषा:

निश्चित वर्ण या मात्राओं को पाद या चरण मानकर रचे गये वाक्य या वाक्य समूह को छन्द कहते हैं। श्लोक शब्द का प्रयोग पहले अनुष्टुप् छन्द के लिए होता था, आजकल तो व्यवहार में संस्कृत भाषा में छन्द सामान्यं के लिए श्लोक शब्द का प्रयोग होता है। पद्य शब्द की भी ऐसी ही स्थिति हैं। पाद- ज्ञेय पादः चतुर्थांशः अर्थात् श्लोक के चौथे भाग को पाद कहा जाता है।

वर्ण अथवा मात्राओं की संख्या एवं क्र

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

छन्द के भेदः

छन्द दो प्रकार के होते हैं-

(1) वर्णिक (वृत्त) छन्द

(2) मात्रिक (जाति) छन्द

वर्णिक छन्द-

जिन छन्दों के चरण या पाद वर्णों की संख्या पर निर्भर हों, उन्हें वर्णिक छन्द कहते हैं। जैसे- इन्द्रवज्रा, वंशस्य आदि। वृत्त तीन प्रकार का होता है।

समवृत्त- जिन छन्दों के चारों चरणों में मात्राएँ या वर्ण समान संख्या में होते हैं, उन्हें समवृत्त छन्द कहते हैं जैसे अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा आदि।

अर्द्धसमवृत्त- जिन छन्दों के प्रथम व तृतीय में तथा द्वितीय व चतुर्थ चरणों में मात्राओं अथवा वर्णों की संख्या समान होती है, उन्हें अर्द्धसमवृत्त कहते हैं। जैसे- वियोगिनी, पुष्पिताग्रा, हरिणप्लुता।

विषमवृत्त- जिन छन्दों के चारों चरणों में मात्राओं अथवा वर्णों की संख्या भिन्न-भिन्न हो उन छन्द को विषमवृत्त या विषम वर्णिक छन्द कहते हैं।

जैसे - आर्या।

मात्रिक छन्द-

जिन छन्दों के पाद या चरण मात्राओं की संख्या पर निर्भर हो, उन्हें मात्रिक छन्द कहते हैं। जैसे आर्या।

मात्रा- स्वर वर्ण का निश्चित उच्चारण काल मात्रा कहा जाता है इसके दो भेद होते हैं-

(1) लघु (2) दीर्घ गुरु

लघु की मात्रा

जहाँ अ, इ, उ, ऋ, लृ का उच्चारण हो वहाँ ह्रस्व/लघु की मात्रा लगती है इसके लिए वर्ण के ऊपर (।) एक लकीर लगा देते हैं।

जैसे- अमर ऋषि शुभ लृक

गुरु की मात्रा-

• जहाँ आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ की मात्रा लगी हो तो वहाँ गुरु की मात्रा लगती है।

जैसे-

ऽ

आधारा, राकेशः

ऽऽऽऽऽऽ

• जिस वर्ण में अनुस्वार तथा विसर्ग लगा हो तो गुरु की मात्रा होती है।

जैसे- संयम, संयोग, रामः ।

ऽ।।ऽऽ।ऽऽ

संयुक्त वर्ण से पहला वर्ण गुरु होता है, जब दो या दो से अधिक व्यंजन वर्ण एक जगह मिल जाते हैं, वह संयुक्त वर्ण होता है।

जैसे- विज्ञान, भिक्षुका। हलन्त व आधा वर्ण में मात्रा नहीं लगाते हैं, हलन्त व आधा वर्ण से पूर्व का वर्ण गुरु होता है। जैसे जगत्। • संयुक्त वर्ण में अन्तिम वर्ण के उच्चारण के अनुसोर मात्रा लगती है।

छन्द के नियम के अनुसार चरण का अन्तिम वर्ण बदल जाता है अर्थात् लघु होने पर भी दीर्घ हो जाता है।

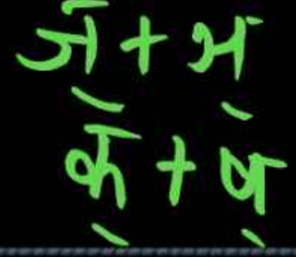

• संयुक्ताक्षर

= क्ष = क् + ष

= त्र = त् + र

= ज्ञ = ज् + ञ

* अवग्रह (5) की कोई गिनती नहीं होती है, सम्बोधन के चिन्ह का भी कोई महत्त्व नहीं होता है।

• दीर्घ या गुरु के लिए वर्ण के ऊपर S का चिन्ह लगा देते हैं।

• ह्रस्व वर्ण कब दीर्घ हो जाता है।

(i) अनुस्वार तथा विसर्ग लगने पर अं, अः

(ii) संयुक्त वर्ण से पूर्व आने पर

(iii) छन्द के लक्षण के अनुसार अन्तिम ह्रस्व भी दीर्घ हो जाता है।

जैसे नक्षत्र, नक्षत्रम् ।

गण- वर्णों या मात्राओं के समूह को गण कहते हैं, गण दो प्रकार के होते हैं। वर्णात्मक और मात्रात्मक।

वर्णात्मक गण- तीन वर्षों के समूह को वर्णात्मक गण कहते हैं। तीन वर्णों का समूह एक गण होता है।

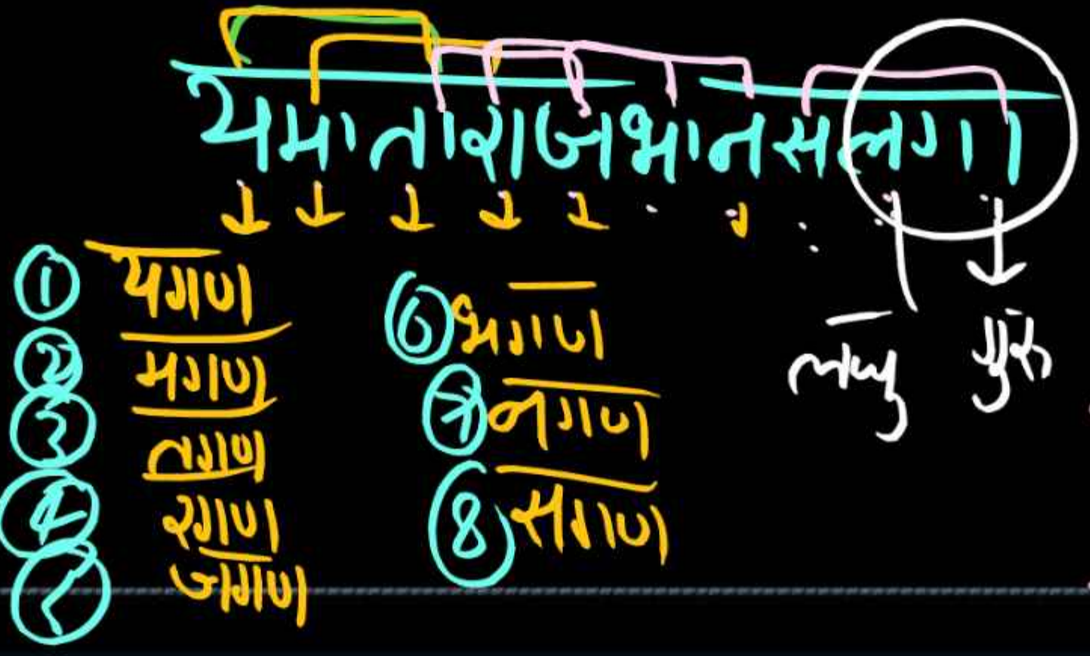

यगण = यमाता ।ऽ
मगण = मातारा ऽऽ
तगण = ताराज ऽऽ।
रगण = राजभा ऽ।ऽ
जगण = जभान ।ऽ।
भगण = भानस ऽ।।
नगण = नसल = ।।।
सगण = सलगु = ।।ऽ

यरता लघु
भजसा गुरु

आदिलघु — ISS , मध्यलघु — SIS , तगण — SSI

आदि गुरु — SII , जगण — ISI , सगण — IIS

मगण = सर्व गुरु SSS
नगण = III सर्व लघु

गण सूत्रम् - यमाताराजभान सलगा:

गण आठ होते हैं। एक गण में तीन वर्ण आते हैं।

1.	यगण	–	यमाता	–	।ऽऽ	–	यशोदा
2.	मगण	–	मातारा	–	ऽऽऽ	–	मान्धात
3.	तगण	–	ताराज	–	ऽऽ।	–	तेजस्वि
4.	रगण	–	राजभा	–	ऽ।ऽ	–	राधिक
5.	जगण	–	जभान	–	।ऽ।	–	जयन्त
6.	भगण	–	भानस	–	ऽ।।	–	भारत
7.	नगण	–	नसल	–	।।।	–	रमन
8.	सगण	–	सलगा	–	।।ऽ	–	सरला

जिस गण का स्वरूप याद करना हो उस गण को लिख देते हैं तथा उसके बाद दो -अक्षर जोड़ देते हैं।

जैसे - यगण यमाता बाद में उनके ऊपर लघु / गुरु का चिन्ह लगा देते हैं।

सूत्र-" आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्तिगौरवम् यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्"

आदिगुरु – भगण – ऽ।।

मध्यगुरु – जगण – ।ऽ।

अवसानगुरु – सगण – ।।ऽ

यरता - यगण – ।ऽऽ

रगण ऽ।ऽ

तगण ऽऽ।

मनौ – मगण ऽऽऽ

नगण ।।।

सूत्र- मस्त्रि गुरुस्त्रि लघुश्च नकारो भादिगुरु: पुनरादिलघुर्य: जो गुरुमध्यगतो रत्नमध्य सोऽन्तगुरु: कथितोऽन्तलघुस्त:

अर्थ-

मस्त्रिगुरु: मगण में तीनों गुरु 555

नकार: त्रिलघु नगण में तीनों लघु

भादिगुरु: भगण आदि में गुरु

आदि लघुर्य यगण आदि में लघु

जो गुरु मध्यगत: = जगण में मध्य में गुरु

रलमध्य: रगण मध्य में लघु

सोडन्तगुरु: = सगण के अन्त में गुरु

अन्त लघुस्त: तगण अन्त में लघु

यति या विराम-

- छन्द के उच्चारण में मधुरता लाने के लिए जहाँ रुका जाता है, उसे यति कहते हैं। सभी छन्दों के पाद के अन्त में यति होती है। कुछ छन्दों के बीच में भी यति होती है।
- जब समान वर्णिक छन्द एक छन्द में होते हैं, तो उसे जाति कहते हैं।
- एक निश्चित वर्ण, संज्ञाओं के चरणों से बनने वाले भिन्न-भिन्न नामों के छन्दों की एक जाति बनती है। जातियों की संख्या 26 है।
- छन्द शास्त्र में एक चरण या पद में अधिकतम वर्ण 26 आते हैं तथा कम से. कम एक आता है।

- छन्द शास्त्र में 26 वर्षों से अधिक वर्षों के चरण होने पर या पाद होने पर
- दण्डक कहलाता है। चार से अधिक पाँच या 6 पाद होने पर वह छन्द गाथा कहलाता है।

छन्दों के लक्षण और उदाहरण

❖ **मात्रिक छन्द:** मात्रिक छन्द में मात्रा की गणना होती है लघु की एक तथा गुरु की दो मात्राएँ होती हैं-

आर्या छन्द

❖ **लक्षण:** यस्याः प्रथमे पादे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि। अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पंचदश साऽऽर्या ॥

12
18
12
15

1 पाद = 12 मात्राएं
3 पाद = 12 मात्राएं
2 पाद = 18 मात्राएं
4 पाद = 15 मात्राएं

अर्थ:

जिस छन्द के प्रथम और तृतीय चरण में 12-12 मात्रा होती हैं। दूसरे में 18 तथा चौथे में 15 मात्रा होती हैं, वहाँ आर्या छन्द होता है।

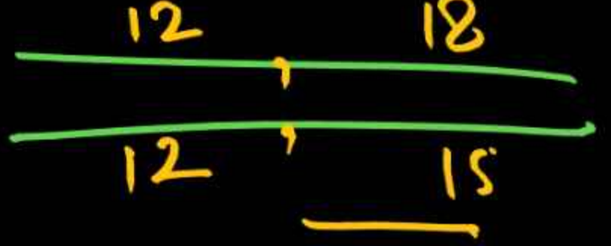

पहचान :

- यदि दो पंक्ति के श्लोक में ऊपर की पंक्ति बड़ी तथा नीचे की पंक्ति छोटी हो, तो वहाँ आर्या छन्द की संभावना होती है।
- पहले चरण में 7 वर्ण या 9 वर्ण हों तो वहाँ आर्या छन्द की संभावना होती है।

❖ उदाहरण:-

वर्णिक छन्दः

(2) अनुष्टुप् छन्द :

• **लक्षण :-**

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र लघु पंचमम् ।
द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घ मन्ययोः ॥

• **लक्षण का अर्थ -** जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 8-8 वर्ण होते हैं चारों चरणों में पाँचवा वर्ण लघु और छठा वर्ण गुरु होता है। पहले और तीसरे में सातवां वर्ण गुरु तथा दूसरे और चौथे चरण में सातवां वर्ण लघु होता है।

वहाँ अनुष्टुप् छन्द होता है। अनुष्टुप छन्द के प्रत्येक चरण में 8 अक्षर होते हैं। इस प्रकार चारों चरणों में 32 अक्षर होते हैं।

उदहारण

1. गुरुर्ब्रह्म गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

2:... शैले-शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे-गजे। साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥

3. वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये । जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ ॥

इन्द्रवज्रा = 11 × 4 = 44
उपेन्द्रवज्रा = 11 × 4 = 44
उपजाति = 11 × 4 = 44